आज का पुरुषार्थ 13 May 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज ज़रा ध्यान दे कौन-सी राह पर हम खड़े है और अपने भाग्य को फिर से चमकाये "*

हम सभी बाबा के बच्चे बहुत बहुत **भाग्यवान** है। हमने भी यह **अलौकिक** ब्राह्मण जन्म लिया है। और जन्म लेते ही हमारी **भाग्य** की रेखाएं खींच गई। हमारी दशा, हमारा काल, हमारी राशि सब निश्चित हो गई।

जन्म लेते ही किसको **सेकण्ड में निश्चय** हो गया, बस आ गये जहाँ आना था। किसी को सेकण्ड में नशा चढ़ गया, सेकण्ड में वह **योगयुक्त** हो गये। यह पहले नम्बर की आत्माओं का पहचान है।

उस पहले नम्बर में **अष्टरतन** भी आ गये। और फिर **108** भी आ गये। दुसरे नम्बर की आत्माओं को सात दिन के बाद निश्चय हुआ। सात दिन लगे नशा चढ़ने में। सात दिन लगे योग सिखने में।

और तीसरे नम्बर की आत्माओं को सालों लगा इस संशय और निश्चय की युद्ध में। नशा कभी उतरता रहा, कभी चढ़ता रहा। **योग** लगा, नहीं लगा।

तो हम चेक कर ले, बाबा के पास आते ही हमारी राशि कैसी रही, हमारा काल कैसा रहा? आते ही बस हम खुशी में झूम उठे? **योग** लग गया हमारा? बाबा से मिलन होने लगा?

या अभी भी **संशय** और **निश्चय** की युद्ध में हमारा जीवन बीत रहा है? प्राप्तियाँ हुई तो निश्चय हो गया। प्राप्ति न हुई तो संशय आ गया। बाबा की मदद मिलती गई तो वाह् बाबा। और ना मिली तो जाओ बाबा!

तो हम चेक कर ले, कैसा हमारा आरम्भ का काल रहा? नशा बढ़ी सूक्ष्म चीज़ है। भगवान मिल गये! आते ही नशा चढ़ गया, पहली नम्बर की आत्मायें।

नशा चढ़ रहा धीरे-धीरे? सदा नशे में स्थित रहे। **यह ईश्वरीय नशा है।** जो श्रेष्ठ स्वमानधारी है वह सदा नशें में रहते है। तो चेक कर ले, हमें नशा चढ़ा रहता है, कि ....

" भगवान के वरदानी हाथ हमारे सिर पर है .. वो हमारे साथी है .. हजार भुजाओं की छत्रछाया हमारे सिर पर है "

या हम अकेले मेहसूस करते है, और बहुत याद के बाद हमें यह स्मृति तीव्र होती है?

अपने निश्चय को, अपने नशे को और अपने योगयुक्त स्थिति को पहचाने।

अगर **हम बाबा के स्वरुप पर सहज ही स्थिर रहते है**, अगर हम अपने आत्मिक स्वरुप और **पाँचों स्वरूपों** की अनुभवों में सहज आ जाते है तो हम पहले नम्बर की आत्मायें है।

अगर हम अभी भी **योग** लगाना सीख रहे है, योग लगता है, टूटता है तो हमें और प्रयास करना चाहिए। बार-बार के अभ्यास करने से आत्मा योगयुक्त हो सकती है।

संसार में कोई भी कार्य कठिन नहीं होता। प्रैक्टिस हर कठिन कार्य को सरल बना देती है।

हम बार-बार योग का अभ्यास करे। अपने timing fix करें। मन में नया-नया उमंग उत्साह भरें। नई-नई प्लैनिंग करें, नई-नई विधियों से अभ्यास करें तो हमारा योग का चार्ट भी तेजी से बढ़ता जायेगा।

तो आज सारा दिन हम अभ्यास करेंगे ....

" मैं इस देह में अवतार हूँ "

अपने को देखेंगे ....

" मैं आत्मा परमधाम में बैठी हूँ "

फिर ....

" वहाँ से धीरे-धीरे नीचे उतरती हूँ "

और ....

" इस देह में प्रवेश कर लेती हूँ "

अब ....

" मैं भ्रकुटी सिंहासन पर विराजमान हूँ "

अब ....

" मेरा कार्य पूरा हुआ "

और ....

" मैं इस देह को छोड़कर चली अपने धाम "

और फिर ....

" पहुँच गई बाबा की किरणों के नीचे "

यह आने और जाने की प्रैक्टिस हम करते रहेंगे।

और .. " *जब हम बाबा के पास बैठ गये .. तो पुनः हममें शक्तियाँ भरने लगी* "

और हम नीचे आ गये ..भ्रकुटी सिंहासन पर बैठकर उन शक्तियों को चारों ओर फैलाने लगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org